Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 03, Issue 8, pp 740-745, August, 2026

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन

सुश्री अंजू गहोई [1], प्रो. (डॉ.) एम. एस. पवार [2]

[1] शोधार्थी, आर.के.डी.एफ. विश्वविद्यालय, भोपाल

[2] प्रोफेसर और डीन, शिक्षा विभाग, आरकेडीएफ यूनिवर्सिटी, भोपाल

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का अध्ययन करना तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों–बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच संबंध ज्ञात करना था। अध्ययन में मध्य प्रदेश के भोपाल जिले के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं 10 के कुल 1120 विद्यार्थियों, जिनमें 560 छात्र और 560 छात्राएँ थीं, को नमूने में सम्मिलित किया गया। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु अनुकूल हाईड, संजय पेठे एवं उपेन्द्र धर द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी तथा ओ. पी. जॉन, ई. एम. डोनाह्यू एवं आर. एल. केंटल द्वारा विकसित बिग फाइव व्यक्तित्व सूची का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा पियर्सन के उत्पाद–क्षण सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि 69 प्रतिशत विद्यार्थियों में उच्च, 22 प्रतिशत में मध्यम तथा 9 प्रतिशत में निम्न स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पाई गई। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के साथ सकारात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। इसके विपरीत, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का भावनात्मक स्थिरता के साथ ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई। अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच महत्वपूर्ण संबंध विद्यमान है। अतः विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए भावनात्मक जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक कौशल तथा भावनात्मक प्रबंधन को बढ़ावा देना आवश्यक है।

कीवर्ड: *भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्तित्व विकास, किशोरावस्था, बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता, अनुभवों के प्रति खुलापन।*

परिचय

व्यक्तित्व मानव जीवन की उन विशिष्ट विशेषताओं का समन्वित रूप है, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अभिवृत्तियों, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को व्यक्त करता है। व्यक्तित्व केवल व्यक्ति के बाहरी रूप या व्यवहार का नाम नहीं है, बल्कि यह उसके मनोवैज्ञानिक गुणों और उन प्रक्रियाओं की संगठित संरचना है, जो यह निर्धारित करती हैं कि वह विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को किस प्रकार ढालता और अभिव्यक्त करता है। व्यक्तित्व को समय के साथ विकसित होने वाली संगठित विचारों, भावनाओं और व्यवहार की रूपरेखा के रूप में भी देखा गया है, जो व्यक्ति की विशिष्ट प्रकृति को आकार देती है (आर्नेट, २०००)। इसी कारण व्यक्तित्व को स्थिर एवं अपरिवर्तनीय विशेषता न मानकर एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है, जिसमें आनुवंशिकता, पालन–पोषण, शिक्षा, सामाजिक अनुभव तथा भौतिक एवं सामाजिक परिवेश निरंतर योगदान करते हैं (भोइटे एवं शिंदे, २०१६)। विशेष रूप से किशोरावस्था व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है, क्योंकि इस अवधि में व्यक्ति अपने आत्म–बोध, पहचान, अभिप्रेरणाओं और जीवन–लक्ष्यों को नए सिरे से समझने लगता है। किशोरों में अमूर्त चिंतन, आत्म–पहचान के निर्माण तथा अपने सामाजिक परिवेश में स्वयं के स्थान को समझने की क्षमता विकसित होती है (नाकुला एवं तोशालिस, २००६)। इसी अवस्था में आंतरिक तथा बाह्य प्रभावों के बीच निरंतर अंतःक्रिया व्यक्ति के व्यक्तित्व को एक विशिष्ट दिशा प्रदान करती है।

इसी व्यापक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व को एक बहुआयामी संरचना के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें अनेक परस्पर संबंधित गुण व्यक्ति के व्यवहार की समग्र तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। व्यक्तित्व के अध्ययन में पंच–कारक मॉडल विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है, जिसमें बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन प्रमुख आयाम हैं। ये आयाम इस बात को समझने में सहायता करते हैं कि व्यक्ति सामाजिक परिस्थितियों में किस प्रकार व्यवहार करता है, दूसरों के साथ कैसा संबंध स्थापित करता है, अपने दायित्वों के प्रति कितना उत्तरदायी है, भावनात्मक परिस्थितियों का सामना कैसे करता है तथा नवीन अनुभवों और विचारों के प्रति कितना ग्रहणशील है। इसलिए माध्यमिक विद्यालय स्तर पर व्यक्तित्व विकास केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि उनके सामाजिक समायोजन, आत्मविश्वास, निर्णय–निर्माण, संबंधों तथा भविष्य के उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।

व्यक्तित्व विकास की इस प्रक्रिया में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता से आशय व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और परिस्थितियों के अनुरूप उनका प्रभावी उपयोग करने की क्षमता से है। सालोवे और मेयर ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को ऐसी बुद्धिमत्ता के रूप में स्पष्ट किया जिसमें व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं और अनुभूतियों पर ध्यान देने, उनमें भेद करने तथा प्राप्त जानकारी का उपयोग अपने विचारों और कार्यों को निर्देशित करने के लिए करता है (सालोवे एवं मेयर, १९९०)। इस प्रकार भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को केवल यह समझने में सहायता नहीं करती कि वह क्या अनुभव कर रहा है, बल्कि यह भी सिखाती है कि उन भावनाओं के साथ किस प्रकार रचनात्मक ढंग से व्यवहार किया जाए। किशोरावस्था में इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि इस अवस्था में भावनात्मक अनुभव तीव्र होते हैं तथा साथियों का प्रभाव, शैक्षिक अपेक्षाएँ, पारिवारिक संबंध और भविष्य से जुड़ी चिंताएँ व्यक्ति के भावनात्मक संसार को प्रभावित करती हैं। गोलमैन (१९९५) के अनुसार भावनात्मक दक्षता रखने वाले विद्यार्थी साथियों के दबाव, शैक्षिक अपेक्षाओं तथा विभिन्न प्रलोभनों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम होते हैं। इसी प्रकार टेलर (२००१) ने संकेत किया कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना करने तथा अपनी भावनाओं को अधिक प्रभावी रूप से नियंत्रित करने में सक्षम होता है। अतः भावनात्मक जागरूकता, भावनात्मक नियंत्रण, सहानुभूति और सामाजिक कौशल किशोरों के व्यक्तिगत तथा शैक्षिक समायोजन

के महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध इस अध्ययन का केंद्रीय वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है। व्यक्ति अपनी भावनाओं को जितनी स्पष्टता से समझता और नियंत्रित करता है, उतनी ही प्रभावशीलता से वह अपने व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को व्यवहार में अभिव्यक्त कर सकता है। दूसरों की भावनाओं को समझने और सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त प्रतिक्रिया देने की क्षमता बहिर्मुखता तथा सहमतिशीलता से जुड़ी सामाजिक अभिव्यक्तियों को सुदृढ़ कर सकती है, जबकि आत्म–नियंत्रण और भावनात्मक अनुशासन कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों के विकास में सहायक हो सकते हैं। दूसरी ओर, नकारात्मक भावनाओं को प्रभावी ढंग से संभालने की क्षमता व्यक्ति को भावनात्मक अस्थिरता से बचाते हुए भावनात्मक स्थिरता को बढ़ावा दे सकती है। इसी प्रकार विभिन्न अनुभवों, विचारों और परिस्थितियों को खुले मन से स्वीकार करने की क्षमता अनुभवों के प्रति खुलापन से जुड़ सकती है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में भी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों से पाया गया हैय उदाहरणतः साक्लोफ्स्की (२००३) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तंत्रिकातापिता से नकारात्मक तथा बहिर्मुखता, खुलापन, सहमतिशीलता और कर्तव्यनिष्ठा से सकारात्मक संबंध पाया। इस प्रकार भावनात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्तित्व से अलग किसी एकाकी क्षमता के रूप में देखना पर्याप्त नहीं हैय बल्कि यह उस आंतरिक आधार के रूप में समझी जा सकती है जिसके माध्यम से किशोर अपनी भावनाओं, संबंधों और व्यवहार को व्यवस्थित करते हुए अपने व्यक्तित्व को आकार देते हैं। इसलिए माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध का अध्ययन शैक्षिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इससे यह समझने में सहायता मिल सकती है कि विद्यालयी शिक्षा किस प्रकार ऐसे विद्यार्थियों के विकास को दिशा दे सकती है जो भावनात्मक रूप से संतुलित, सामाजिक रूप से संवेदनशील, उत्तरदायी, आत्मनियंत्रित और जीवन के विविध अनुभवों के प्रति खुले हों।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और उनका प्रभावी उपयोग करने की क्षमता के रूप में देखा जाता है। किशोरावस्था में, जब विद्यार्थी तीव्र शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक परिवर्तनों से गुजरते हैं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनके व्यवहार, सामाजिक संबंधों और समायोजन को दिशा प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण क्षमता बन जाती है। सालोवे और मेयर (1990) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को ऐसी बुद्धि के रूप में प्रस्तुत किया जो व्यक्ति को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं की निगरानी, उनमें भेद करने तथा उस जानकारी का उपयोग अपने विचारों और कार्यों को निर्देशित करने में सक्षम बनाती है। आगे गोलेमन (1995) ने भावनात्मक दक्षता को सामाजिक दबाव, शैक्षिक अपेक्षाओं और किशोरावस्था की विभिन्न चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए महत्वपूर्ण माना। इसी प्रकार, टेलर (2001) ने संकेत किया कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का बेहतर सामना करने तथा अपनी भावनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में सहायता करती है। इस प्रकार, उपलब्ध साहित्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता को केवल भावनात्मक क्षमता न मानकर मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक कार्यशीलता, समायोजन तथा समग्र व्यक्तित्व विकास से जुड़ी क्षमता के रूप में स्थापित करता है।

व्यक्तित्व के अध्ययन में पंच–कारक मॉडल को व्यापक स्वीकृति प्राप्त हुई है। मैकक्रे और कोस्टा (1997, 2008) के अनुसार व्यक्तित्व को पाँच प्रमुख आयामोंकृबहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, न्यूरोटिसिज्म तथा अनुभवों के प्रति खुलापनकृके माध्यम से समझा जा सकता है। शाइनर (2019) ने न्यूरोटिसिज्म को चिंता, असुरक्षा, उदासी और चिड़चिड़ेपन जैसी नकारात्मक भावनाओं के अनुभव से जोड़ा, जबकि स्मिली और सहयोगियों (2019) ने बहिर्मुखता को सामाजिकता, उत्साह, साहस तथा सकारात्मक भावनात्मकता से संबंधित माना। अनुभवों के प्रति खुलापन जिज्ञासा एवं नवीन सूचनाओं के प्रति संज्ञानात्मक अन्वेषण को प्रतिबिंबित करता है (डी यंग, 2015य श्वाबा, 2019), जबकि सहमतिशीलता में करुणा, सहानुभूति, विनम्रता और सहयोगात्मक प्रवृत्तियाँ सम्मिलित होती हैं (सोटो एवं जॉन, 2017)। कर्तव्यनिष्ठा आत्म–नियंत्रण, उत्तरदायित्व, परिश्रम, व्यवस्था तथा नियम–पालन से संबंधित है (जैक्सन एवं रॉबर्ट्स, 2017)। अतः पंच–कारक मॉडल किशोरों के व्यक्तित्व को विभिन्न मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारात्मक आयामों में समझने का एक उपयोगी आधार प्रदान करता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध पर उपलब्ध अध्ययनों से दोनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर्संबंध का संकेत मिलता है। रैपिसार्डा (2002) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व आयामों के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया। साक्लोफ्स्के (2003) ने पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का न्यूरोटिसिज्म से नकारात्मक तथा बहिर्मुखता, अनुभवों के प्रति खुलेपन, सहमतिशीलता और कर्तव्यनिष्ठा से सकारात्मक एवं सार्थक संबंध था। इसी प्रकार, केम्प और सहयोगियों (2005) ने संकेत किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध संज्ञानात्मक क्षमता की अपेक्षा व्यक्तित्व से अधिक निकटता से हो सकता है। ये निष्कर्ष इस संभावना को बल देते हैं कि अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने की क्षमता सामाजिक सहभागिता, सहानुभूति, उत्तरदायित्व, भावनात्मक स्थिरता तथा नवीन अनुभवों के प्रति ग्रहणशीलता जैसे व्यक्तित्वगत गुणों के विकास से जुड़ी हो सकती है।

हालाँकि, उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के संबंध पर विभिन्न आयु–वर्गों एवं संदर्भों में अध्ययन किए गए हैं, फिर भी भारतीय माध्यमिक विद्यालयी संदर्भ में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के पाँच प्रमुख आयामों के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध को एक साथ समझने वाले अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देते हैं। विशेषतः किशोरावस्था के संवेदनशील विकासात्मक चरण में यह संबंध शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अतः वर्तमान अध्ययन इसी शोध–अंतराल को संबोधित करते हुए माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच संबंध को अनुभवजन्य रूप से समझने का प्रयास करता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

किशोरावस्था मानव विकास की ऐसी संवेदनशील और परिवर्तनशील अवस्था है, जिसमें व्यक्ति के आत्म–बोध, सामाजिक संबंधों, अभिवृत्तियों, भावनाओं तथा व्यक्तित्व का पुनर्गठन तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी केवल शैक्षिक ज्ञान ही अर्जित नहीं कर रहे होते, बल्कि वे यह भी सीख रहे होते हैं कि वे कौन हैं, दूसरों के साथ किस प्रकार संबंध स्थापित करें और विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को किस प्रकार नियंत्रित एवं अभिव्यक्त करें। किशोरावस्था में पहचान–निर्माण, अमूर्त चिंतन तथा सामाजिक परिवेश में स्वयं के स्थान को समझने की क्षमता विकसित होती है (नाकुला एवं तोशालिस, 2006)। इसी कारण माध्यमिक विद्यालय की अवस्था को व्यक्तित्व विकास के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में देखा जाना आवश्यक है। व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन तथा सामाजिक व्यवहार से भी संबंधित पाए गए हैं (ग्राजियानो एवं वार्ड, 1992)।

इस संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्त्व विशेष रूप से उभरकर सामने आता है। सालोवे एवं मेयर (1990) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, उनमें भेद करने तथा उस जानकारी का उपयोग विचार और व्यवहार को निर्देशित करने की क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया। भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को केवल भावनाओं का अनुभव करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और सामाजिक परिस्थितियों में उनका रचनात्मक उपयोग करने में सक्षम बनाती है। किशोर विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययनों से भी संकेत मिलता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध भावनात्मक अभिव्यक्तियों को पहचानने, सामाजिक समर्थन तथा मनोदशा–प्रबंधन जैसी क्षमताओं से है (शूटे एवं अन्य, 2001)। इस प्रकार भावनात्मक बुद्धिमत्ता किशोरों के व्यक्तिगत, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन का महत्वपूर्ण आधार बन सकती है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि किशोरों को एक साथ अनेक शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने की क्षमता विद्यार्थियों को तनाव, असफलता, साथियों के दबाव तथा पारस्परिक संघर्षों से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में सहायता कर सकती है। भावनात्मक जागरूकता विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को पहचानने, भावनात्मक नियंत्रण उन्हें परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिक्रिया देने, जबकि सहानुभूति उन्हें दूसरों की भावनाओं और दृष्टिकोणों को समझने में सहायता करती है। इस प्रकार ये क्षमताएँ स्वस्थ सामाजिक संबंधों तथा बेहतर व्यक्तिगत समायोजन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता का एक अन्य महत्वपूर्ण आधार भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संभावित संबंध है। व्यक्तित्व का पंच–कारक दृष्टिकोण बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन जैसे आयामों के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिकता, सहयोगशीलता, आत्म–अनुशासन, भावनात्मक संतुलन तथा नवीन अनुभवों के प्रति ग्रहणशीलता को समझने का अवसर देता है। यदि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनने में सहायता करती है, तो इसका संबंध व्यक्तित्व के इन विभिन्न आयामों से होना स्वाभाविक रूप से अपेक्षित है। पूर्ववर्ती अध्ययनों ने भी भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध की ओर संकेत किया है। उदाहरणतः साक्लोफ्स्की (2003) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तंत्रिकातापिता से नकारात्मक तथा बहिर्मुखता, अनुभवों के प्रति खुलापन, सहमतिशीलता और कर्तव्यनिष्ठा से सकारात्मक संबंध पाया।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धि तक सीमित न रखकर विद्यार्थियों के समग्र विकास, सामाजिक–भावनात्मक अधिगम, संवेदनशीलता, सहानुभूति, चरित्र–निर्माण और संतुलित व्यक्तित्व के विकास पर बल देती है। नीति में शिक्षा का उद्देश्य ऐसे अच्छे मनुष्यों का निर्माण करना बताया गया है जो तर्कपूर्ण चिंतन एवं कार्य के साथ करुणा और सहानुभूति भी रखते हों। इस दृष्टि से भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व विकास का अध्ययन वर्तमान भारतीय शिक्षा–परिप्रेक्ष्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध का अध्ययन" शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन न केवल माध्यमिक विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर को समझने में सहायता करेगा, बल्कि यह भी स्पष्ट करने का प्रयास करेगा कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच किस प्रकार का संबंध विद्यमान है। इसके निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों तथा शैक्षिक योजनाकारों को ऐसी शैक्षिक एवं सह–पाठ्यचर्या संबंधी प्रक्रियाएँ विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी केवल सफल शिक्षार्थी ही नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से संतुलित, सामाजिक रूप से संवेदनशील, उत्तरदायी और समग्र रूप से विकसित व्यक्तित्व वाले नागरिक बन सकें।

अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाना।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता और अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच संबंध का पता लगाना।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन के लिए तैयार किए गए शोध प्रश्न ये हैं –

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है?

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के लिए तैयार किए गए परिकल्पनाएं निम्न हैं –

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता और अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।

कार्यविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का अध्ययन करना तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच आयामोंकृबहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापनकृके बीच संबंध का अध्ययन करना था। अध्ययन मध्य प्रदेश के भोपाल जिले में किया गया। अध्ययन के लिए 16 माध्यमिक विद्यालयों का यादृच्छिक चयन किया गया, जिनमें 8 शासकीय तथा 8 निजी प्रबंधित विद्यालय थेय इनमें 8 विद्यालय ग्रामीण तथा 8 शहरी क्षेत्रों से लिए गए। चयनित विद्यालयों की कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत सभी विद्यार्थियों को नमूने में सम्मिलित किया गया, जिससे कुल 1120 विद्यार्थियों का नमूना प्राप्त हुआ, जिसमें 560 छात्र एवं 560 छात्राएँ थीं। अध्ययन के प्रमुख चर भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के पाँच आयाम थे। आँकड़ों के संकलन के लिए अनुकूल हाइड, संज्योत पेठे एवं उपेन्द्र धर द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी तथा ओ. पी. जॉन, ई. एम. डोनाह्यू एवं आर. एल. केंटल द्वारा विकसित बिग फाइव व्यक्तित्व सूची का प्रयोग किया गया। आवश्यक अनुमति प्राप्त करने के पश्चात दोनों उपकरणों का चयनित विद्यार्थियों पर निर्धारित निर्देशों एवं मानकीकृत परिस्थितियों में प्रशासन किया गया तथा प्राप्त प्रतिक्रियाओं का निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार अंकन किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा पियर्सन के उत्पाद–क्षण सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया, जिससे विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के पाँच आयामों के बीच संबंध का निर्धारण किया जा सके।

परिणाम और विश्लेषण

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का पता लगाना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शोध प्रश्न का निर्माण किया गया है।

शोध प्रश्न 1 : माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर क्या है?

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मापन अनुकूल हाइड, संज्योत पेठे एवं उपेन्द्र धर द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी के माध्यम से किया गया। प्राप्त भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्राप्तांकों के आधार पर विद्यार्थियों को उच्च, मध्यम तथा निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया। समस्त माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की श्रेणीवार भावनात्मक बुद्धिमत्ता का वितरण आरेख 1 में प्रस्तुत किया गया है।

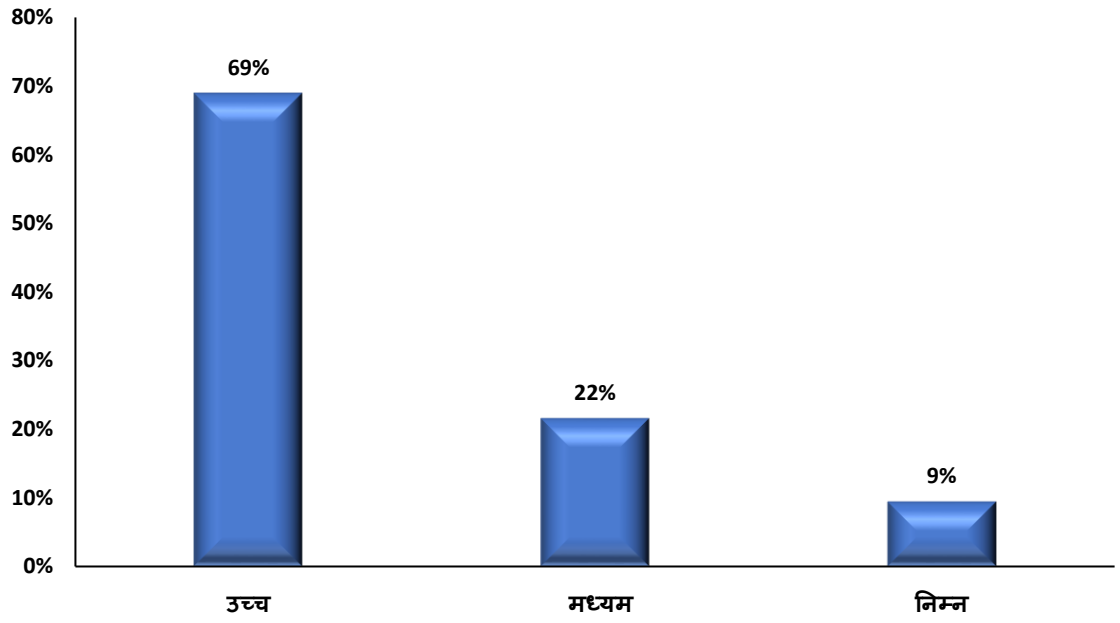

आरेख 1 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर

आरेख 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 69 प्रतिशत माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, 22 प्रतिशत विद्यार्थियों में मध्यम स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा 9 प्रतिशत विद्यार्थियों में निम्न स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पाई गई। आगे के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दो–तिहाई से अधिक माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यमान है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं व्यक्तित्व विकास के बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलापन के बीच संबंध

सत्रहवीं परिकल्पना है –"माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है।" माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए पियर्सन के गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध का प्रयोग किया गया। 'त' का मान तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1

भावनात्मक बुद्धिमत्ता, बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के लिए 'आर' का मान

चर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'आर' का मान	सार्थकता का स्तर
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	1120	138.67	18.547	0.414	0.01
बहिर्मुखता	1120	29.32	श्रनद.59		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	1120	138.67	18.547	0.373	0.01
सहमतिशीलता	1120	59.97	15.453		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	1120	138.67	18.547	0.374	0.01
कर्तव्यनिष्ठा	1120	33.31	5.853		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	1120	138.67	18.547	–0.557	0.01
भावनात्मक स्थिरता	1120	18.49	11.069		
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	1120	138.67	18.547	0.374	0.01
अनुभवों के प्रति खुलापन	1120	30.45	8.892		

तालिका 1 से भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बीच संबंध स्पष्ट होता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं बहिर्मुखता के बीच 'आर' का मान 0.414 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सहमतिशीलता के बीच 'आर' का मान 0.373 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं कर्तव्यनिष्ठा के बीच 'आर' का मान 0.374 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक स्थिरता के बीच 'आर' का मान दृ0.557 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच 'आर' का मान 0.374 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। चूँकि सभी आयामों के बीच प्राप्त सहसंबंध के मान सांख्यिकीय रूप से सार्थक हैं, अतः परिकल्पना, "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, भावनात्मक स्थिरता एवं अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं है", अस्वीकृत की जाती है।

तालिका 4.27 से यह स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर जितना अधिक होगा, उनमें बहिर्मुखता का स्तर भी उतना ही अधिक होने की प्रवृत्ति होगी। इसी प्रकार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक होने पर सहमतिशीलता का स्तर भी अधिक होने की प्रवृत्ति होगी। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के उच्च स्तर के साथ कर्तव्यनिष्ठा का स्तर भी उच्च पाया जाएगा तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता के उच्च स्तर के साथ अनुभवों के प्रति खुलेपन का स्तर भी अधिक होने की प्रवृत्ति होगी। इसके विपरीत, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का निम्न स्तर इन आयामों के अपेक्षाकृत निम्न स्तर से संबंधित होगा।

तालिका 4.27 से यह भी स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक स्थिरता के बीच ऋणात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर बढ़ने के साथ भावनात्मक स्थिरता के प्राप्तांक में कमी होने की प्रवृत्ति है तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर कम होने पर भावनात्मक स्थिरता के प्राप्तांक में वृद्धि होने की प्रवृत्ति है।

निष्कर्ष:

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का भावनात्मक स्थिरता के साथ ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया।

चर्चा

विद्यार्थियों में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अपेक्षाकृत अधिक प्रतिशत पाया जाना इस तथ्य से संबंधित हो सकता है कि किशोरावस्था में विद्यार्थी अपनी भावनाओं को पहचानने, सामाजिक परिस्थितियों को समझने तथा दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने की क्षमताओं का क्रमिक रूप से विकास करते हैं। विद्यालयी अनुभव, सहपाठी संबंध, पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक सहभागिता भी इन क्षमताओं को विकसित करने में योगदान दे सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के बीच धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। यह निष्कर्ष साकलोफ्स्की, ऑस्टिन और मिन्स्की (2003) के अध्ययन के अनुरूप है, जिसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता का बहिर्मुखता, सहमतिशीलता, कर्तव्यनिष्ठा तथा अनुभवों के प्रति खुलेपन के साथ धनात्मक संबंध तथा न्यूरोटिसिज्म के साथ ऋणात्मक संबंध पाया गया।

इसी प्रकार, पेट्राइड्स और फर्नहम (2001) ने पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तित्व के पाँच–कारक प्रतिमान से संबंधित है, यद्यपि इसे व्यक्तित्व का पूर्ण पर्याय नहीं माना जा सकता। कुमार और टंखा (2023) के भारतीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में भी व्यक्तित्व के पाँचों कारकों और गुणात्मक भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच निकट संबंध पाया गया। विशेष रूप से बहिर्मुखता, कर्तव्यनिष्ठा तथा न्यूरोटिसिज्म भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न पक्षों से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े पाए गए।

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों की व्याख्या इस आधार पर की जा सकती है कि बहिर्मुखता सामाजिक सहभागिता और संप्रेषण से जुड़ी होती है, जिससे विद्यार्थियों को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने और व्यक्त करने के अधिक अवसर मिलते हैं। सहमतिशीलता में सहानुभूति, सहयोग और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता जैसी विशेषताएँ शामिल होने के कारण इसका भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ सकारात्मक संबंध होना स्वाभाविक है। कर्तव्यनिष्ठा आत्म–अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और उत्तरदायित्व से संबंधित है, जो भावनात्मक नियंत्रण में सहायक हो सकते हैं। इसी प्रकार, अनुभवों के प्रति खुलापन नए विचारों, परिस्थितियों और अनुभवों को स्वीकार करने की प्रवृत्ति से संबंधित होने के कारण भावनात्मक अनुभवों को समझने और उनसे सीखने में सहायता कर सकता है।

हालाँकि, व्यक्तित्व और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंधों के संबंध में सभी अध्ययनों में पूर्ण समानता नहीं पाई गई है। उदाहरण के लिए, वैन डर जी, थाइस और शाकेल (2002) के अध्ययन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कर्तव्यनिष्ठा के बीच अपेक्षित संबंध नहीं पाया गया, जबकि पेट्राइड्स और फर्नहम (2001) तथा साकलोफ्स्की मज ंस. (2003) ने इनके बीच पर्याप्त संबंध पाया। इससे संकेत मिलता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व के बीच संबंध उपकरणों, नमूने, आयु, सांस्कृतिक संदर्भ तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता की संकल्पनात्मक परिभाषा के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

वर्तमान अध्ययन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और भावनात्मक स्थिरता के बीच ऋणात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। यह परिणाम सामान्यतः उन अध्ययनों से संबंधित है जिनमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता का न्यूरोटिसिज्म के साथ ऋणात्मक संबंध पाया गया है। तथापि, यहाँ उपकरण के अंकन की दिशा को ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि बिग फाइव व्यक्तित्व सूची में न्यूरोटिसिज्म और भावनात्मक स्थिरता विपरीत ध्रुवों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। अतः इस परिणाम की अंतिम व्याख्या उपकरण की मूल स्कोरिंग एवं प्रतिलोम अंकन प्रक्रिया की पुष्टि के बाद ही की जानी चाहिए।

समग्र रूप से, वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती साहित्य के साथ व्यापक रूप से सामंजस्य प्रदर्शित करते हैं और यह संकेत देते हैं कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा व्यक्तित्व एक–दूसरे से संबंधित मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ हैं। इसके संभावित कारणों में भावनात्मक जागरूकता, आत्म–नियमन, सहानुभूति, सामाजिक सहभागिता, आत्म–अनुशासन तथा नए अनुभवों के प्रति ग्रहणशीलता प्रमुख हो सकते हैं। फिर भी, चूँकि वर्तमान अध्ययन सहसंबंधात्मक प्रकृति का है, इसलिए इन संबंधों को कारणात्मक प्रभाव के रूप में व्याख्यायित करना उचित नहीं होगा।

संदर्भ–ग्रन्थ

ब्रैकेट, एम. ए., रिवर्स, एस. ई., एवं सालोवे, पी. (2011). इमोशनल इंटेलिजेंसरू इम्प्लीकेशंस फॉर पर्सनल, सोशल, एकेडमिक, एंड वर्कप्लेस सक्सेस. *सोशल एंड पर्सनैलिटी साइकोलॉजी कम्पास, 5*(1), 88–103।

बॉयल, जी. जे., हम्फ्री, जी., फरिना, ए., राइट, जे. ए., एवं बर्न्स, जे. एम. (2008). इमोशनल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटीरू ए मेटा–एनालिटिक रिव्यू. *पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 45*(6), 585–594।

कॉस्टा, पी. टी., जूनियर, एवं मैकक्रे, आर. आर. (1992). *रिवाइज्ड एनईओ पर्सनैलिटी इन्वेंटरी (एनईओ पीआई–आर) एंड एनईओ फाइव–फैक्टर इन्वेंटरीरू प्रोफेशनल मैनुअल.* साइकोलॉजिकल असेसमेंट रिसोर्सेज।

डॉउनी, एल. ए., माउंट, एस. एम., लॉयड, जे., हैन्सन, आर. के., एवं स्टाउटन, के. (2008). इमोशनल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटी ट्रेट्स. *पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 45*(2), 135–140।

गोल्डबर्ग, एल. आर. (1990). एन अल्टरनेटिव डिस्क्रिप्शन ऑफ पर्सनैलिटीरू द बिग–फाइव फैक्टर स्ट्रक्चर. *जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 59*(6), 1216–1229।

गोल्डमैन, डी. (1995). *इमोशनल इंटेलिजेंसरू व्हाय इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू.* बैंटम बुक्स।

हैरिस, जे. ए., एवं शील्ड्स, जे. (2011). इमोशनल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटीरू ए मेटा–एनालिटिक इन्वेस्टिगेशन. *पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 51*(1), 14–19।

जॉन, ओ. पी., डोनाह्यू, ई. एम., एवं केंटल, आर. एल. (1991). *द बिग फाइव इन्वेंटरी–वर्जन 4ए एंड 5ए.* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बर्कले, इंस्टीट्यूट ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल रिसर्च।

कुमार, वी. वी., एवं टंखा, जी. (2023). एसोसिएशन बिटवीन द बिग फाइव एंड ट्रेट इमोशनल इंटेलिजेंस अमंग कॉलेज स्टूडेंट्स. *साइकोलॉजी रिसर्च एंड बिहेवियर मैनेजमेंट, 16,* 915–925।

मेयर, जे. डी., रॉबर्ट्स, आर. डी., एवं बार्सेड, जी. (2008). ह्यूमन एबिलिटीजरू इमोशनल इंटेलिजेंस. *एनुअल रिव्यू ऑफ साइकोलॉजी, 59,* 507–536।

मेयर, जे. डी., एवं सालोवे, पी. (1997). *व्हाट इज इमोशनल इंटेलिजेंस? इन पी. सालोवे एवं डी. जे. स्लूटर (संपादक), इमोशनल डेवलपमेंट एंड इमोशनल इंटेलिजेंसरू एजुकेशनल इम्प्लीकेशंस* (पृ. 3–31). बेसिक बुक्स।

पेट्राइड्स, के. वी., एवं फर्नहम, ए. (2001). ट्रेट इमोशनल इंटेलिजेंसरू साइकोमेट्रिक इन्वेस्टिगेशन विथ रेफरेंस टू एस्टैब्लिश्ड ट्रेट टैक्सोनॉमीज. *यूरोपियन जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी, 15*(6), 425–448।

साकलोफ्स्की, डी. एच., ऑस्टिन, ई. जे., एवं मिन्स्की, पी. एस. (2003). फैक्टर स्ट्रक्चर एंड वैलिडिटी ऑफ अ ट्रेट इमोशनल इंटेलिजेंस मेजर. *पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 34*(4), 707–721।

सालोवे, पी., एवं मेयर, जे. डी. (1990). इमोशनल इंटेलिजेंस. इमैजिनेशन, *कॉग्निशन एंड पर्सनैलिटी, 9*(3), 185–211।

शुट्टे, एन. एस., मालोफ, जे. एम., हॉल, एल. ई., हैगर्टी, डी. जे., कूपर, जे. टी., गोल्डन, सी. जे., एवं डॉर्नहाइम, एल. (1998). डेवलपमेंट एंड वैलिडेशन ऑफ अ मेजर ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस. *पर्सनैलिटी एंड इंडिविजुअल डिफरेंसेस, 25*(2), 167–177।

वैन डर जी, के., थाइस, एम., एवं शाकेल, एम. (2002). द रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इंटेलिजेंस विथ इंटेलिजेंस एंड द बिग फाइव. *यूरोपियन जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी, 16*(2), 103–125।

वॉल्ट्ज, जे. एम., एवं स्टाउट, जे. एम. (2014). इमोशनल इंटेलिजेंस एंड पर्सनैलिटीरू ए सिस्टेमैटिक रिव्यू. *जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी असेसमेंट, 96*(2), 1–12।